भक्ति समझने में, करने में और प्राप्तव्य रस के दृष्टिकोण से सबसे सरल और सबसे अच्छा मार्ग है।

बहुत से लोग चिंतित रहते हैं कि हमने अब तक काफी पाप किये है। एक पापयुक्त जीवन जीने के बाद क्या रास्ता है? हर किसी के पास अनंत जन्मों का अतीत है और अनंत समय में सभी ने अनंत पाप किए हैं। फिर से पाप न करने के संकल्प से रोकर भगवान से क्षमा याचना करनी चाहिए। भगवान का स्मरण धीरे धीरे सभी अशुद्धियों को धोता है एवं मन के पूर्ण शुद्धिकरण पर जब जीव भगवान के शरणागत हो जाता है तो भगवान सभी पिछले पापों को क्षमा कर देते है। भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं कि सभी धर्मों को छोड कर मेरी और केवल मेरी शरण में आओ। मैं तुम्हें तुम्हारे सभी पापों से मुक्त करूंगा और तुमको माया के इस जन्म मृत्यु के बंधन से भी मुक्त कर अनंत आनंद से सदा के लिए मालामाल कर दूंगा।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp 94232 09132

हिंदू शास्त्रों में एक संदर्भ है, जो दिखाता है कि यहां तक कि एक वेश्याने भी भगवान के शाश्वत आनंद को प्राप्त किया है। अनेक हत्याएँ कर चूका वाल्मिक भी उसी जन्म में भगवत्प्राप्ति कर महापुरूष बना है। अतः निराश होने का कोई कारण नही है। अतीत के बारे में मत सोचो। भविष्य का निर्णय वर्तमान द्वारा किया जाता है। इससलिए वर्तमान पर ध्यान दो। बस आध्यात्मिक अभ्यास पर ध्यान केंद्रित करो। आध्यात्मिक मार्ग के साथ आगे बढ़ने पर, प्रवृत्ति बदल जाएगी।

गायन, नृत्य, नौकरी, व्यवसाय आदि जैसी कोई भी कार्रवाई करते समय, भगवान कही ना कही पास में खड़े

या बैठे है, ऐसा मेहसूस करो। तब आपको यह एहसास होगा कि भगवान आपकी हर चीज को देख रहे है। भगवान का स्मरण हमेशा बना रहेगा। सबकुछ मन के माध्यम से किया जाता है। किसी को भी अपने अभ्यास के बारे में नही बताना चाहिए। आध्यात्मिक अभ्यास गुप्त ही रखना चाहिए। यह अत्यंत आवश्यक है। नही तो लोग आपका मजाक बनाएंगे। मजाक नही भी बनायेंगे तो आपको लोगों के सामने दिखावा करने की, लोकरंजन की बीमारी लगेगी कि लोग हमे बडा भक्त माने और आप अपने अनंत सुख पाने के लक्ष्य से गिर जायेंगे।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp 94232 09132

किसी भी तरह से मन में भगवान को लाना चाहिए। जब आप ईश्वर के लिए कोई काम करते है या मन जब ईश्वर को याद करता है, तब आपको कोई अन्य धार्मिक विधी न करने से कोई दंड नही मिलता। भक्ति अपने में परिपूर्ण है। भक्ति करने से ज्ञान एवं वैराग्य अपने आप होगा। उसके लिए अलग से साधन करने की आवश्यकता नही है।